Reserach Scholar: **Naseema Khan**

Supervisor: **Dr. Mukesh Kumar Mirotha**

Department: **Hindi**

Title: **21st Century ki Hindi Kahani ke Swaroop Ka Adhyayan (2000-2015)**

संछिप्त शोध- सार

इक्कीसवीं सदी की कहानी वैविध्यमयी एवं अपने युग की जटिलताओं को अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम है| आरंभिक कहानियाँ उपदेश प्रधान और मनोरंजन से युक्त सीधी- सपाट कहानियाँ थीं| जब कहानी में कौतूहलपूर्ण और मनोरंजन प्रधान कहानियाँ लिखी गईं, उस समय तक जीवन संघर्ष अपेक्षाकृत कम जटिल था| लेकिन जैसे- जैसे जीवन- संघर्ष जटिल होता गया, कहानी की संरचना भी बदलती गई| कहानी को जीवन के व्यापक सन्दर्भों से जोड़ने में प्रेमचंद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है| हिंदी कहानी के विकास के साथ ही भारतीय समाज पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा, जिसके प्रभावस्वरूप हिंदी में प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवादऔर अस्तित्ववाद आदि विचारधाराओं से प्रभावित कहानियाँ लिखी गईं| समकालीन दौर तक आते- आते कहानी अनेक पड़ावों से होकर गुज़री| कहानी के परंपरागत ढाँचे को तोड़ा गया| कहानी विधा में शिल्प के नए- नए प्रयोग हुए| रेखाचित्र, डायरी, संस्मरण जैसी विधाओं को भी समेटकर कहानी के स्वरूप में नया विस्तार दिया गया|

वर्तमान समय में परिवर्तन की गति बहुत तीव्र है| रोज़- रोज़ बदलते यथार्थ ने रचनाकारों के समक्ष निश्चय ही नयी चुनौतियाँ खड़ी की हैं| इक्कीसवीं सदी की कहानी भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद की चुनौतियों को उजागर करती है| पहले के बाजार को मनुष्य नियंत्रित करता था| समाज की ज़रूरतों से वह संचालित था लेकिन आज का बाज़ार समाज की ज़रूरतों से नहीं मुनाफे की ज़रूरतों से संचालित है और यह बाज़ार मनुष्य की चेतना, रचनाशीलता आदि को नियंत्रित कर रहा है|

इक्कीसवीं सदी में पुराने मूल्यों का विघटन तेज़ी से हुआ और नवीन मूल्यों के प्रति आग्रह बढ़ा है| व्यावसायिकता का बढ़ता हुआ प्रभाव मनुष्य को अपनी परंपरागत मान्यता और मर्यादा की उपेक्षा करके व्यावसायिक मूल्य को स्वीकार करने को प्रेरित करता है| अधिक से अधिक धन कमाने की होड़ में मानवतावादी मूल्यों की उपेक्षा को बढ़ावा मिला है|

इस दौर की कहानियों में यह प्रवृत्ति अपने मुखर रूप में अभिव्यक्त हुई है| इन कहानियों में समकालीन मनुष्य की वह तस्वीर उभरती है जिसमें मनुष्यता की जगह स्वार्थपरता, कुटिलता, विवेकशून्यता और हृदयहीनता जैसी प्रवृत्तियों ने डेरा डाल दिया है| इसके अतिरिक्त मानवीय मूल्यों का विघटन, नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच मूल्यों का द्वंद्व भी इस दौर की कहानियों की प्रमुख प्रवृत्ति है|

विमर्श केंद्रित कहानियाँ इस दौर की प्रमुख प्रवृत्ति है| हिंदी कहानी के केंद्र में कई प्रकार के विमर्श हैं| स्त्री- विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि| वर्तमान में अल्पसंख्यक विमर्श और प्रवासी विमर्श भी शुरु हो चुके हैं| इन विमर्शों के आरंभ होने से हिंदी कहानी में नवीन विषयों का समावेश हुआ| इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों के ऊपर सूचनाओं के बोझ तले दबे होने का आरोप है| आज कहानीकार के पास सूचनाओं का अंबार है, जिसका भरपूर प्रयोग उसने कहानी लेखन में किया है| लेकिन फैक्ट को फिक्शन बनाने के लिए जिस संवेदना और अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है वह हर कहानीकार के पास नहीं है|

वर्तमान कहानीकारों ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा समाज में जो अपसंस्कृति फैलायी जा रही है, उस पर भी गंभीर चिंता जताई है| इधर मीडिया में युगीन विकृतियों को अधिक से अधिक वीभत्स रूप में चित्रित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है| इंटरनेट की करिश्माई दुनिया का एक सत्य दीमक की तरह समाज को खोखला भी कर रहा है| उसके उपयोग और दुरुपयोग को रेखांकित करती यह कहानियाँ मौजूदा परिवेश की एक नए किस्म की समस्या को हमारे सामने लाती हैं|

इक्कीसवीं सदी की युवा पीढ़ी अपनी तरह से कहानी में प्रयोग कर रही है तथा अपने समय को अपने अनुभव के साथ रच रही है| इस दौर के कहानीकार नए तेवर के साथ कहानियाँ कहना चाहते हैं| भाषा- शैली और शिल्प- संरचना के स्तर पर ही नहीं, विचार, विचारधारा, वैमर्शिक कहानी की सबसे बड़ी भूमिका आज यही है कि वह हमें बदले हुए समय की सच्चाई, संवेदनहीनता, अमानवीयता, छद्म, झूठ इत्यादि से रचनात्मक स्तर पर परिचित कराती है|